बी. ए. द्वितीय वर्ष
समष्टि अर्थशास्त्र एवं सार्वजनिक वित्त

(प्रथम प्रश्न पत्र)

खण्ड – I

अध्याय – 1 : समष्टि अर्थशास्त्र : प्रकृति एवं क्षेत्र

क्षेत्र व महत्व, सीमाएँ, व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र के अन्तर, व्यष्टि से समष्टि की ओर संक्रमण

अध्याय – 2 : राष्ट्रीय आय की अवधरणाएँ एवं भाप

राष्ट्रीय आप का अर्थ, प्रति व्यक्ति आय का अर्थ, राष्टीप,आय का अनुमान, केन्दीय सांख्यिकीय संगठन, स्वतंत्राता के पश्चात राष्ट्रीय आय की गणना की विध्यिाँ, महत्व, भारत में राष्ट्रीय आय को मापने में कठिनाइयाँ राष्ट्रीय आप में प्रवृत्तियाँ, राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आप आय की वर्षिक वृद्वि दर, भारत की प्रतिव्यक्ति आप तथा GDP की विकास दर की अन्य देशों से तुलना, विभिन्न देशों के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्वि दर, राष्ट्रीय, आय का ढाँचा, राष्ट्रीय आय में विभिन्न देशों के योगदान में तुलनात्मक परिवर्तन, भारत की राष्ट्रीय आय की मुख्य विरोषताएँ कम राष्ट्रीय आय के कारण, भारत की राष्ट्रीय आय बढ़ने सुझाव

अध्याय – 3 : सामाजिक लेखांकन

आशय, धत्क, प्रस्तुतीकरण, महत्व, कठिनाइयाँ

अध्याय – 4 : हरित लेखांकन

पर्यावरण का महत्व, प्रदूषण, प्रबन्धन,प्रदूषण एवं राष्ट्रीय,आय लेखे,हरित लेखांकन

अध्याय – 5 : रोजगार का प्रतिष्ठित सिद्धांत एवं 'से' का बाजार नियम

पूर्व रोजगार, प्रतिष्ठित अवधरणा, कीन्स एवं आधुनिक विचार'से' का बाजार नियमश्रम माँग व श्रम पूर्ति विश्लेषण

अध्याय – 6 : उत्पादन एवं कीन्स का रोजगार सिद्धांत

महत्व, आलोचना, कीन्स का अर्थशास्त्रा एवं विकासशील देश प्रभावी मांग,कीन्स एवं प्रतिष्ठित रोजगार सिद्धात की तुलना

अध्याय – 7 : प्रभावपूर्ण माँग का सिद्धांत

आशय, समग्र माँग कीमत व वक्र, समग्र पूर्ति कीमत व,वक्र,प्रभावी माँग निर्धरण, महत्व

खण्ड II

अध्याय – 8 : उपभोग फल

आशय,औसत उपभोग प्रवृत्ति सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति,बचत प्रवृत्ति,नियम का कथनउपभोग फलन का महत्व एवं सिद्धांत

अध्याय – 9 : विनियोग गुणक

गुणक, गुणक के रिसाव, महत्व, प्रकिया, गुणक की, व्युत्पन्ति सरल गुणक निर्धारिक तत्व गुणक या सीमांत, बचत की प्रवृत्ति, प्रतिलोम व्रिफया, निवेश गुणपफ तथ,केन्ज का आय स्व रोजगार सिद्धांत, सार्थकता

अध्याय – 10 :विनियोग का सिद्धांत स्वायत्त तथा प्रेरित विनियोग व पूँजी की सीमान्त कुशलता

विनियोग का आशय, रूप,निर्धरक घटक, सीमान्त क्षमता अनुसूची, निवेश माँग वव्रफ, इच्छित सामूहिक व्यय फलन

अध्याय – 11 : बचत तथा विनियोग : प्रत्याशित व वास्तविक समानता एवं साम्य

बचत क्या होती है ? व्यक्तिगत बचतें तथा सामाजिक बचतें, विनियोग, प्रतिष्ठित विचारधरा, केन्जवादी विचारधारा

अध्याय – 12 : ब्याज की दर : प्रतिष्ठित, नव– प्रतिष्ठित एवं कीन्स का सिद्धांत

ब्याज का आशय,दरों में अन्तर,सिद्वांत

अध्याय – 13 : व्यापार चव्रफ : प्रवृफति एवं सिद्धांत

परिभाषा, प्रकार, अवस्थाएँ, कारण, नियंत्रित करने के उपाय सिद्धांत

खण्ड III

अध्याय – 14 : अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार व अन्तर्क्षेत्राीय, व्यापार, विदेशी व्यापार का महत्व, स्वतंत्राता से पूर्व विदेशी,व्यापार, योजनाकाल में विदेशी व्यापार,प्रमुख निर्यात,निर्यात वृद्धि के लिए सुझाव, निर्यात वृद्धि के लिए, सरकारी प्रत्यन्न, विदेशी व्यापार की संरचना, विदेशी, व्यापार की दशा, विदेशी व्यापार की संवृद्धि एवं संरचना

अध्याय – 15 : अन्तराष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत

सिद्धांत

अध्याय – 16 : व्यापार की शर्तें

अनुकूल या प्रतिकूल, प्रभाव डालने वाले घटक , गणना की कठिनाइयाँ

अध्याय – 17 : तटकर एवं अभ्यंश

तटकर, दर की मान, प्रभाव, दृष्टतम तटकर,आपात अभ्यंशों के प्रकार

अध्याय – 18 : व्यापार सन्तुलन एवं भुगतान संतुलन

भुगतान संतुलन का अर्थ, व्यापार संतुलन,व्यापाद संतुलन एवं व्यापार संतुलन में अन्तर,संरचना एवं स्वरूप, भुगतान शेष में असंतुलन , कुल भुगतान शेष की प्रवृत्तियाँ, चालूखातें पर भुगतान शेष की प्रवृत्तियों ,भुगतान संतुलन,संकट,प्रतिकूल भुगतान शेष प्रतिकूल कापार शेष के कारण,भुगतान शेष के असंतुलन को ठीक करनें के उपाय

अध्याय – 19 : अवमूल्यन

आशय, प्रभाव, सीमाएँ

अध्याय – 20 : विदेशी व्यापार गुण

आशय, कार्यप्रणाली, मान्यताएँ, रेखीय वर्णन, आलोचनाएँ, महत्व

खण्ड IV

अध्याय – 21 : अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की स्थापना, उद्देश्य, कार्य,,अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का संगठन, प्रबन्धन एवं,मताधिकार, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की सदस्यता, पूँजीतथा अभ्यंश ,अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष का प्रचालन, मूल्यांकन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा विकाशील देश अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा भारत

अध्याय – 22 : विश्व बैंक

विश्व बैंक क्या है, विश्व बैंक के उद्देश्य, विश्व बैंक का प्रबन्धन संगठन, विश्व बैंक की सदस्यता, विश्व बैंक के कार्य, विश्व बैंक की कार्यप्रणाली, विश्व बैंक की,सफलताएँ या उपलिब्धयाँ ,असफलताएँ विश्व बैंक तथा भारत

अध्याय – 23 : विश्व व्यापार संगठन डब्ल्यू. टी. ओ.

गैट, उद्देश्य, सिद्धात , गैट के विभिन्न दौर, उपलब्धियाँ,असफलताएँ, गैट तथा भारत, विश्व व्यापार,संगठन, गैट व विश्व व्यापार संगठन में अन्तरसंगठन एवं प्रबन्धन, विश्व व्यापार संगठन एवं भारतीय कृषि ,बौद्धिक सम्पदा अधिकार सुरक्षा, विश्व व्यापार संगठन तथा भारत

अध्याय – 24 : भारत में विदेशी व्यापार

विदेशी व्यापार का आशय एवं परिभाषाएँ, विदेशी व्यापार की आवश्यकता एवं महत्व, भारत के विदेशी व्यापार कीद संरचना , भारत के विदेशी व्यापार की मात्रा भारत के विदेशी व्यापार की नवीनतम प्रवृत्तियाँ

अध्याय – 25 : विदेशी व्यापार नीति

निर्यात–आयात नीति 2002–2007, विदेशी–व्यापार नीति 2004–2009, निर्यात–आयात नीति 2009–14, निर्यात–आयात नीति 2009–14 के लिए वर्ष 2013–14 का वार्षिक घोषणा पत्र

अध्याय – 26 : विदेशी व्यापार नीति एवं निर्यात संवर्द्धन

निर्यात–आयात नीति का आशय ,निर्यात–आयात नीति का महत्व, निर्यात–आयात नीति के प्रकार नवीन निर्यात–आयात नीति निर्यात संवर्द्धन

अध्याय – 27 : बहुराष्ट्रीय निगम

आशय, प्रारूप, विकास के कारण, भारत व बहुराष्ट्रीय निगम प्रभाव, संगठनात्मक प्रतिरूप